फोटो: रघु राय

यूनियन कार्बाइड संयंत्र के सामने खेलते बच्चे

डाव-कार्बाइड के खिलाफ बच्चे

सतीनाथ षडंगी

भोपाल में बच्चों का एक संगठन है जिसका नाम है – डाव-कार्बाइड के खिलाफ बच्चे। ये बच्चे हर इतवार को मिलते हैं। हर बच्चा कागज़ के कुर्रे (टुकड़े) पर लिखता है कि उस दिन क्या होना चाहिए। कोई चाहता है कि सब मिलकर नाचें, कोई चाहता है कि सब मिलकर गाना गाएँ, किसी बच्चे को योग सीखना होता है। कोई चाहता है कि सब मिलकर कम्प्यूटर चलाना सीखें। किसी बच्चे को पार्क जाकर झूला झूलना है तो कोई चाहता है कि सब मिलकर जंगल में या किसी झरने के पास पिकनिक मनाएँ। फिर सारे बच्चों के कुर्रे सबके बीच में फेंके जाते हैं। सबसे छोटी उम्र का बच्चा उनमें से एक कुर्रा उठाता है और उसमें जो लिखा होता है सारे बच्चे मिलकर वही करते हैं ।

इस तरह हर इतवार को कार्यक्रम तय करने के पीछे उनका मकसद यह होता है कि हर बच्चे – चाहे वह छोटी उम्र का हो या बड़ी उम्र का, लड़का हो या लड़की – की चाहत को बराबर वज़न दिया जाए। साथ ही इस बात का पूरा-पूरा ख्याल रखा जाता है कि कोई किसी दूसरे पर दादागीरी नहीं कर सके।

इनमें से बहुत सारे बच्चे पुलिस थाने की हवालात में बन्द हो चुके हैं और कई तो पुलिस वालों के मुक्के और डण्डे भी झेल चुके हैं। कई मौकों पर खुफिया पुलिस इनके पीछे लग चुकी है और कई थानों में इनके नाम दर्ज हो चुके हैं। इसकी वजह यह है कि ये बच्चे अकसर धरना, प्रदर्शन आदि में शामिल होते हैं। इन बच्चों ने दो बड़ी कम्पनियों के खिलाफ लड़ाई छेड़ रखी है। इन कम्पनियों का नाम यूनियन कार्बाइड और डाव केमिकल है। इन दोनों कम्पनियों का सबसे बड़ा दफ्तर अमरीका में है पर इनके कारखाने दुनिया भर में बहुत सारे देशों में हैं।

यूनियन कार्बाइड कम्पनी का एक कारखाना भोपाल में हुआ करता था। इस कारखाने में फसलों में लगने वाले कीड़ों को मारने के लिए ज़हर बनाया जाता था। कम्पनी, किसानों को अपने खेतों में इस्तेमाल करने के लिए ज़हर बेचती थी और मुनाफा कमाती थी। जिस ज़हर से कीड़े मरें उससे इन्सान भी मर सकते हैं या कम से कम बीमार तो हो ही सकते हैं। इसलिए बहुत ज़रूरी है कि कारखाने में ऐसा इन्तज़ाम किया जाए कि वहाँ बनाया जा रहा ज़हर, कारखाने में काम कर रहे मज़दूरों या कारखाने के पास रहने वाले लोगों पर कोई असर न करे। लेकिन इन इन्तज़ामों पर पैसा खर्च होता है और यूनियन कार्बाइड कम्पनी का हमेशा ज़ोर ज़्यादा से ज़्यादा मुनाफा कमाने पर रहा। कम्पनी के बड़े अधिकारियों ने कभी इस बात की परवाह नहीं की, कि उनके मुनाफा कमाने के चक्कर में मज़दूरों और आस पास रहने वाले लोगों की जान और सेहत पर बहुत बड़ा खतरा मण्डरा रहा है। कई सालों तक कारखाना खतरनाक हालत में चलता रहा। कई मज़दूर ज़हर के असर से बीमार हुए। एक मज़दूर जिनका नाम अशरफ था उन्हें काम करते वक्त इतना ज़हर लगा कि उनकी जान चली गई। जो भी मज़दूर कारखाने के खतरों की बात उठाता था कम्पनी के अधिकारी उसे नौकरी से बर्खास्त कर देते थे। फिर एक रात वही हुआ जिसका डर था। आज से 25 साल पहले 2-3 दिसम्बर 1984 की आधी रात को ज़हरीली गैसों के बादल कारखाने से निकलकर घने कोहरे की तरह ज़मीन पर छा गए। कारखाने के पास रहने वाले ज़्यादातर लोग गरीब थे, उनके घर मिट्टी के थे, छत फूस की। इससे पहले कि लोग कुछ जान पाते ज़हरीली गैसों के बादल उनके घरों में घुस गए। ज़हर इतना तेज़ था कि सोते हुए लोग जाग गए – उन्हें ज़ोर-ज़ोर की खाँसी होने लगी, दम घुटने लगा, आँखों में इतनी जलन होने लगी जैसे किसी ने लाल मिर्च पीसकर आँखों में मल दी हो। किसी को समझ नहीं आ रहा था कि हो क्या रहा है। गलियों, सड़कों में भागते हुए लोगों का शोर था। लोगों ने अपने दरवाज़े खोले तो ज़हर के बादल घर के अन्दर भर गए। सब लोग अपनी जान बचाने ले लिए भागने लगे। भागने में कई बच्चे अपने माँ-बाप से बिछुड़ गए। भागते हुए लोगों में और ज़्यादा ज़हर घुलता जा रहा था। इसके असर से लोग मरते जा रहे थे। सुबह तक पुराने भोपाल की सड़कों, रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म और अस्पताल के चारों ओर लोगों की लाशें ही लाशें पड़ीं थीं। बहुत सारे जानवर भी मारे गए थे – कुत्ते, बिल्ली, बकरियाँ, गाएँ, भैंसें आदि। बहुत सारे जानवर तो बँधे हुए थे। उनकी वहाँ बँधे-बँधे ही जान निकल गई ।

पिछले 25 सालों में 25 हज़ार से ज़्यादा लोग यूनियन कार्बाइड गैस काण्ड की वजह से मारे जा चुके हैं। और आज भी एक लाख से ज़्यादा लोग तकलीफदेह बीमारियों से जूझ रहे हैं। जो बच्चे गैस काण्ड के समय अपनी माँ के पेट में थे या जो गैस काण्ड के बाद पैदा हुए उनमें भी तरह-तरह की बीमारियाँ पाई जा रही हैं।

भोपाल के लोग सिर्फ यूनियन कार्बाइड की ज़हरीली गैसों से ही तबाह नहीं हुए। कारखाने से निकलने वाले ज़हरीले कचरे से आज भी हज़ारों लोग बदहाल और बीमार हैं। गैस काण्ड के बाद कम्पनी के अधिकारियों ने हज़ारों टन ज़हरीला कचरा मिट्टी के नीचे दबा दिया और भोपाल छोड़कर भाग गए। पिछले 25 सालों से बारिश के पानी के साथ कचरे के इस ढेर का ज़हर ज़मीन के नीचे के पानी में घुलता जा रहा है। कारखाने के पास बसे लोग इसी पानी को हैंडपम्प के ज़रिए निकालते और इस्तेमाल करते आ रहे हैं। पीने के पानी में घुले ज़हर की वजह से उन्हें तरह-तरह की बीमारियाँ हो रही हैं और कई लोग कैंसर जैसी बीमारियों से मर रहे हैं। इन बस्तियों में जो बच्चे पैदा हो रहे हैं उनमें एक बड़ी संख्या ऐसे बच्चों की है जिनके होंठ कटे हैं, हाथ-पैर टेढ़े-मेढ़े हैं, जो चल नहीं सकते, बोल नहीं सकते और जिनका दिमाग ठीक से काम नहीं करता है। कारखाने की पास की मिट्टी और ज़मीन के नीचे के पानी में घुले ज़हर को साफ करने की ज़िम्मेदारी यूनियन कार्बाइड कम्पनी की है। इस ज़िम्मेदारी से बचने के लिए आठ साल पहले यूनियन कार्बाइड एक दूसरी अमरीकी कम्पनी डाव केमिकल में शामिल हो गई। अब डाव केमिकल के अधिकारी कह रहे हैं कि जब कचरा उन्होंने फैंका ही नहीं तो फिर वे साफ क्यों करें। या फिर उन लोगों को कोई मदद क्यों पहुँचाएँ जो यूनियन

(शेष भाग पेज 20 पर)

फोटोः सम्भावना ट्रस्ट के सौजन्य से

डाव-कार्बाइड के खिलाफ बच्चे

कार्बाइड के ज़हर से तरह-तरह की तकलीफें भोग रहे हैं।

"डाव-कार्बाइड के खिलाफ बच्चे" यूनियन कार्बाइड और डाव केमिकल को सज़ा दिलवाने की कोशिश कर रहे हैं। उनका कहना है कि जब एक इन्सान किसी दूसरे का कत्ल करता है तो उसे बहुत सालों के लिए जेल भेजा जाता है तो फिर यूनियन कार्बाइड के उन अधिकारियों को क्यों जेल नहीं भेजा जाता जिनके मुनाफे के लालच ने 25 हज़ार से ज़्यादा लोगों को मार दिया। वे चाहते हैं कि डाव केमिकल कम्पनी अपनी ज़िम्मेदारी निभाए और भोपाल की मिट्टी, पानी से ज़हर साफ करे। "डाव-कार्बाइड के खिलाफ बच्चे" के बच्चों का कहना है कि यदि इन कम्पनियों को सज़ा दी जाती है तो इन जैसी दूसरी कम्पनियाँ अपने कारखाने सही तरह से चलाएँगी। और यह ध्यान रखेंगी कि उनसे मज़दूरों और आसपास के लोगों को नुकसान न पहुँचे। उनकी सबसे बड़ी चाहत है कि भोपाल में जो हादसा हुआ, ऐसा हादसा फिर कहीं, कभी भी न हो। अगर तुम उनसे सम्पर्क करना चाहते हो तो इस पते पर चिट्ठी लिख सकते होः

कार्बाइड के खिलाफ बच्चे
द्वारा 44 संत कंवरराम नगर
बैरसिया रोड, भोपाल 462001

छेड़छाड़ उनके सिर के साथ हो रही है

मीनू मिश्रा

जब मैं छोटी थी तो हमें पढ़ाने घर पर मास्टरजी आते थे। मैं और मेरा भाई मास्टरजी से एक साथ पढ़ते थे। हमारे मास्टर जी हैलमेट लगाते थे। उनकी समस्या यह थी कि अगर कोई उनके हैलमेट से छेड़छाड़ करे तो उन्हें लगता था कि छेड़छाड़ हैलमेट के साथ नहीं बल्कि उनके सिर के साथ हो रही है। इसका फायदा उठाते हुए मैं और मेरा भाई अधिकतर उस पर तबला बजाते, थप्पड़ लगाते और ज़्यादा गुस्सा आने पर ज़मीन पर पटक देते। हमें पता था कि यह सब कुछ हैलमेट के साथ नहीं बल्कि मास्टरजी के सिर के साथ हो रहा है। जब कभी मास्टर जी टोकते, "ये तुम क्या कर रहे हो?" हम कहते, "सॉरी सर! गलती से हो गई।"

चित्रः कनक